8

दो कलाकार

आप 'कलाकार' शब्द का प्रयोग प्रायः सुनते हैं। करते भी हैं। क्या आप बता सकते हैं कलाकार किसे कहते हैं? जी हाँ! ऐसा व्यक्ति जिसका किसी-न-किसी कला से संबंध हो जैसे चित्रकार, संगीतकार, मूर्तिकार, साहित्यकार, अभिनेता आदि। लेकिन सवाल उठता है कि यदि कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति या समाज को नया जीवन दे दे, उसे सुधार दे, गढ़ दे, सुंदर बना दे तो क्या वह कलाकार नहीं कहलाएगा? आइए मन्नू भंडारी की 'दो कलाकार' नाम की ऐसी ही कहानी पढ़ते हैं, जिसमें एक ऐसे कलाकार का चित्रण किया गया है, जो कागज पर जीवन-जगत का चित्र बनाने की बजाय लोगों के जीवन को सुधारने, गढ़ने, सँवारने में लगा हुआ है।

उद्देश्य

'दो कलाकार' कहानी पढ़ने के बाद आप

- चित्रा के साथ-साथ अरुणा को भी कलाकार सिद्ध कर सकेंगे;
- दोनों प्रमुख पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ बता सकेंगे;
- कहानी के घटनाक्रम का उल्लेख कर सकेंगे;
- कहानी के तत्त्वों के आधार पर 'दो कलाकार' नामक कहानी की विवेचना कर सकेंगे;
- कहानी की भाषा-शैली पर टिप्पणी लिख सकेंगे;
- कहानी में आए विविध मुहावरों का उचित प्रयोग सीख सकेंगे;
- कार्य की द ष्टि से वाक्य भेद की पहचान कर सकेंगे।

क्रियाकलाप

कहानी में एक पात्र अरुणा ने एक ओर निरक्षर बच्चों को पढ़ाया और दूसरी ओर बीमार बच्चे को बचाने की कोशिश की। दोनों ही कार्य श्रेष्ठ हैं। यदि आपको इन दोनों में से कोई एक चुनना हो तो किसे चुनेंगे और क्यों? तीन तर्क दीजिए।

टिप्पणी

8.1 मूलपाठ

आइए, मूल कहानी को एक बार पढ़ लेते हैं:

दो कलाकार

'ऐ रूनी उठ,' और चादर खींचकर, चित्रा ने सोती हुई अरुणा को झकझोरकर उठा दिया।

'अरे, क्या है?' आँख मलते हुए तनिक खिझलाहट भरे स्वर में अरुणा ने पूछा। चित्रा उसका हाथ पकड़कर खींचती हुई ले गई और अपने नए बनाए हुए चित्र के सामने ले जाकर खड़ा करके बोली– देख, मेरा चित्र पूरा हो गया।

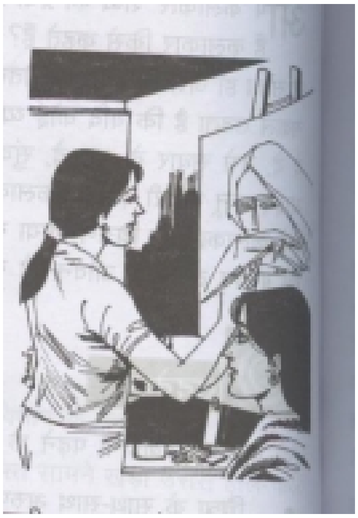

'ओह! तो इसे दिखाने के लिए तूने मेरी नींद खराब कर दी। बदतमीज़ कहीं की!'

'अरे, ज़रा इस चित्र को तो देख। न पा गई पहला इनाम तो नाम बदल देना।' चित्र को चारों ओर से घुमाते हुए अरुणा बोली, 'किधर से देखूँ यह तो बता दे, हज़ार बार तुझसे कहा कि जिसका चित्र बनाए उसका नाम लिख दिया कर, जिससे गलतफ़हमी न हुआ करे, वरना तू बनाए हाथी और हम समझें उल्लू' फिर तस्वीर पर आँख गड़ाते हुए बोली, 'किसी तरह नहीं समझ पा रही हूँ कि चौरासी लाख योनियों में से आखिर यह किस जीव की तस्वीर है?'

'तो आपको यह कोई जीव नज़र आ रहा है? अरे, ज़रा अच्छी तरह देख और समझने की कोशिश कर।'

'अरे, यह क्या? इसमें तो सड़क, आदमी, ट्राम, बस, मोटर, मकान– सब एक-दूसरे पर चढ़ रहे हैं, मानों सबकी खिचड़ी पकाकर रख दी हो। क्या घनचक्कर बनाया है?' और उसने वह चित्र रख दिया।

'जरा सोचकर बता कि यह किसका प्रतीक है?'

'तेरी बेवकूफी का। आई है बड़ी, प्रतीकवाली।'

'अरे, जनाब, यह चित्र आज की दुनिया के कंफ्यूजन का प्रतीक है। समझी, मुझे तो तेरे दिमाग के कंफ्यूजन का प्रतीक नज़र आ रहा है। बिना मतलब ज़िंदगी खराब कर रही

शब्दार्थ

आँख गड़ाना – ध्यान से देखना
खिचड़ी पकाना – इधर-उधर की चीजों को जोड़कर एक चीज़ तैयार करना
घनचक्कर – गोलमाल, ठीक से समझ में न आने वाला

है।' और अरुणा मुँह धोने के लिए बाहर चली गई। लौटी तो देखा तीन-चार बच्चे उसके कमरे के दरवाज़े पर खड़े उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। आते ही बोले, 'दीदी! सब बच्चे आकर बैठ गए, चलिए।'

'आ गए सब बच्चे? अच्छा चलो, मैं अभी आई। 'बच्चे दौड़ पड़े'।

'क्या ये बंदर पाल रखे हैं तूने भी?' फिर ज़रा हँसकर चित्रा बोली, 'एक दिन तेरी पाठशाला का चित्र बनाना होगा। ज़रा लोगों को दिखाया ही करेंगे कि हमारी एक ऐसी मित्र साहिबा थीं जो सारे जमादार, दाइयों और चपरासियों के बच्चों को पढ़ा-पढ़ाकर ही अपने को भारी पंडिता और समाज-सेविका समझती थीं।'

'जा-जा, समझते हैं तो समझते हैं! तू जाकर सारी दुनिया में ढिंढोरा पीटना, हमें कोई शरम है क्या? तेरी तरह लकीरें खींचकर तो समय बर्बाद नहीं करते।' और पैर में चप्पल डालकर वह बाहर मैदान में चली गई, जहाँ बिना किसी आयोजन के ही एक छोटी-सी पाठशाला बनी हुई थी।

शब्दार्थ

रौब खाना – प्रभाव में आना
हाड़ तोड़ना – मेहनत करना
ढिंढोरा पीटना – सभी को बता देना

रात के दस बजे थे। सारे हॉस्टल की बत्तियाँ नियमानुसार बुझ चुकी थीं। ऊपर के एक तल्ले पर अँधेरे में ही खुसुर-फुसुर चल रही थी। रविवार के दिन तो यों ही छुट्‌टी का मूड रहता है। दूसरे, दिन में काफी नींद ली जाती थी, सो दस बजे लड़कियों को किसी तरह भी नींद नहीं आती थी। तभी हॉस्टल के फाटक में जलती हुई टार्च लिए कोई घुसा। अपने कमरे की खिड़की में से झाँकते हुए सविता ने कहा, 'ठाठ तो हास्टल में बस अरुणा ही के हैं, रात नौ बजे लौटो, दस बजे लौटो, कोई बंधन नहीं। हम लोग तो दस के बाद बत्ती भी नहीं जला सकते।'

'लौट आई अरुणा दी? आज सवेरे से ही वे बड़ी परेशान थीं। फुलिया दाई का बच्चा बड़ा बीमार था, दोपहर से वे उसी के यहाँ बैठी थीं। पता नहीं, क्या हुआ बेचारे का?' शीला ने ठंडी साँस भरते हुए कहा।

'तू बड़ी भक्त है अरुणा दी की।'

'उनके जैसे गुण अपना ले तो तेरी भी भक्त हो जाऊँगी।'

'मैं कहती हूँ, उन्हें यही सब करना है तो कहीं और रहें, हॉस्टल में रहकर यह जो नवाबी चलाती हैं, सो तो हमसे बर्दाश्त नहीं होती। सारी लड़कियाँ डरती हैं तो कुछ कहती नहीं, पर प्रिंसिपल और वार्डन तक रौब खाती है इनका, तभी तो सब प्रकार की छूट दे रखी है।'

'तू भी जिस दिन हाड़ तोड़कर दूसरों के लिए यों परिश्रम करने लग जाएगी न, उस दिन तेरा भी सब लोग रौब खाने लगेंगे। पर तुम्हें तो सजने-सँवरने से ही फुर्सत नहीं मिलती, दूसरों के लिए क्या खाक काम करोगी।'

'अच्छा-अच्छा चल, अपना लेक्चर अपने पास रख।'

शब्दार्थ
प्रतीक्षा – इंतजार
निरर्थक – बेकार
आइडिया – विचार
सामर्थ्य – शक्ति

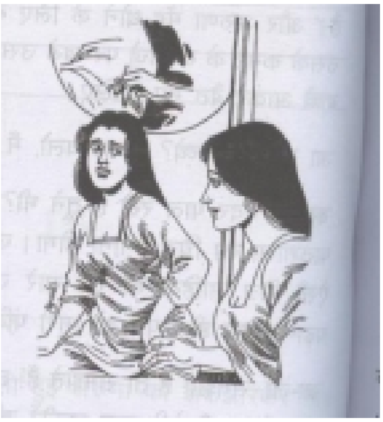

अरुणा अपने कमरे में घुसी तो बहुत ही धीरे से, जिससे चित्रा की नींद न खराब हो। पर चित्रा जग रही थी। दोपहर से अरुणा बिना खाए-पिए बाहर थी, उसे नींद कैसे आती भला? मेस से उसका खाना लाकर मेज़ पर ढककर रख दिया था। अरुणा के आते ही वह उठ बैठी और पूछा, 'बड़ी देर लग गई, क्या हुआ रूनी?'

'वह बच्चा नहीं बचा, चित्रा। किसी तरह उसे नहीं बचा सके।' और उसका स्वर किसी गहरे दुख में डूब गया।

चित्रा ने माचिस लेकर लैंप जलाया और स्टोव जलाने लगी, खाना गरम करने के लिए। तभी अरुणा ने कहा, 'रहने दे चित्रा, मैं खाऊँगी नहीं, मुझे ज़रा भी भूख नहीं है।' और उसकी आँखें फिर छलछला आईं।

बहुत ही स्नेह से अरुणा की पीठ थपथपाते हुए चित्रा ने कहा, 'जो होना था सो हो गया, अब भूखे रहने से क्या होगा, थोड़ा-थोड़ा खा ले।'

'नहीं चित्रा, अब रहने दे, बस तू लैंप बुझा दे।'

उसके बाद दो-तीन दिन तक अरुणा बहुत ही उदास रही, लेकिन समय के साथ-साथ यह गम भी जाता रहा, और सब काम ज्यों-का-त्यों चलने लगा।

चार बजते ही कॉलेज से लड़कियाँ लौट आईं, पर अरुणा नहीं लौटी। चित्रा चाय के लिए उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। 'पता नहीं कहाँ-कहाँ अटक जाती है, बस इसके पीछे बैठे रहा करो।'

'अरे, क्यों बड़-बड़ कर रही है। ले मैं आ गई। चल, बना चाय।'

'तेरे मनोज की चिट्ठी आई है।'

'कहाँ, तूने तो पढ़ ही ली होगी फाड़कर।'

'चल हट, ऐसी बोर चिट्ठियाँ पढ़ने का फालतू समय किसके पास है? तुम्हारी चिट्ठियों में रहता ही क्या है जो कोई पढ़े। बड़े-बड़े आदर्श की बातें, मानो खत न हुआ लेक्चर हुआ।'

'अच्छा-अच्छा', तू लिखा करना रसभरी चिट्ठियाँ, हमें तो वह सब आता नहीं।' वह लिफ़ाफ़ा फाड़कर पत्र पढ़ने लगी। जब उसका पत्र समाप्त हो गया तो चित्रा बोली, 'आज पिताजी का भी पत्र आया है, लिखा है जैसे ही यहाँ का कोर्स समाप्त हो जाए, मैं विदेश जा सकती हूँ। मैं तो जानती थी, पिता जी कभी मना नहीं करेंगे।'

'हाँ भाई! धनी पिता की इकलौती बिटिया ठहरी! तेरी इच्छा कभी टाली जा सकती है! पर सच कहती हूँ, मुझे तो सारी कला इतनी निरर्थक लगती है, इतनी बेमतलब लगती है कि बता नहीं सकती । किस काम की ऐसी कला, जो आदमी को आदमी न रहने दे।'

'तो तू मुझे आदमी नहीं समझती, क्यों?'

टिप्पणी

'तुझे दुनिया से कोई मतलब नहीं, दूसरों से कोई मतलब नहीं, बस चौबीस घंटे अपने रंग और तूलियों में डूबी रहती है। दुनिया में बड़ी से बड़ी घटना घट जाए, पर यदि उसमें तेरे चित्र के लिए कोई आइडिया नहीं तो तेरे लिए वह घटना कोई महत्त्व नहीं रखती। बस, हर घड़ी, हर जगह और हर चीज में से तू अपने चित्रों के लिए मॉडल खोजा करती है।'

'अरे, इस लगन को देखकर ही तो गुरु जी कहते हैं कि वह समय दूर नहीं, जब हिंदुस्तान के कोने-कोने में मेरी शोहरत गूँज उठेगी। अम ता शेरगिल की तरह मेरा भी नाम गूँज उठे, बस यही तमन्ना है।'

'कागज़ पर इन निर्जीव चित्रों को बनाने की बजाय दो-चार की ज़िंदगी क्यों नहीं बना देती, तेरे पास सामर्थ्य है, साधन है।'

'वह काम तो तेरे और मनोज के लिए छोड़ दिया है। तुम दोनों ब्याह कर लो और फिर जल्दी से सारी दुनिया का कल्याण करने के लिए झंडा लेकर निकल पड़ना।' और चित्रा हँस पड़ी। फिर बोली– 'अच्छा, यह बता कि तेरे यह सब करने से क्या हो जाएगा? तूने अपनी अनोखी पाठशाला में दस-बीस बच्चे पढ़ा दिए, तो क्या निरक्षरता मिट जाएगी? अरे, यह सब काम एक के किए नहीं होते। जब तक समाज का सारा ढाँचा नहीं बदलता तब तक कुछ होने का नहीं, और ढाँचा ही बदल गया तो तेरे-मेरे कुछ करने की ज़रूरत नहीं, सब अपने आप ही हो जाएगा।'

फिर दोनों में कला और जीवन को लेकर लंबी-लंबी बहसें होतीं और चित्रा अंत में कान पर हाथ धरकर उठ जाती, 'अच्छा-अच्छा, बंद कर यह लेक्चरबाजी, बोर कहीं की।' यह पिछले पाँच वर्षों से इसी प्रकार चल रहा था। हर दस-बीस दिन बाद दोनों में अपने-अपने उद्देश्य को लेकर, अपनी-अपनी दिनचर्या को लेकर एक गरमागरम बहस हो ही जाती, पर न वह उसकी बात का लोहा मानती थी, न वह उसकी बात की कायल होती थी।

तीन दिन से मूसलाधार वर्षा हो रही थी। रोज़ अखबारों में बाढ़ की खबरें आती थीं। बाढ़-पीड़ितों की दशा बिगड़ती जा रही थी, और वर्षा थी कि थमने का नाम ही नहीं लेती थी। अरुणा सारे दिन चंदा इकट्ठा करने में व्यस्त रहती। एक दिन आखिर चित्रा ने कह ही दिया, 'तेरे इम्तिहान सर पर आ रहे हैं, कुछ पढ़ती-लिखती तू है नहीं, सारे दिन बस भटकती रहती है। फेल हो गई तो तेरे ससुर साहब क्या सोचेंगे कि इतना पैसा बेकार ही पानी में बहाया।'

'आज शाम को एक स्वयंसेवकों का दल जा रहा है, प्रिंसिपल से अनुमति ले ली, मैं भी उनके साथ जा रही हूँ।' चित्रा की बात को बिना सुने उसने कहा।

शाम को अरुणा चली गई। पंद्रह दिन बाद वह लौटी तो उसकी हालत काफी खस्ता हो रही थी। सूरत ऐसी निकल आई थी मानो छह महीने से बीमार हो। चित्रा उस समय अपने गुरुदेव के पास गई हुई थी। अरुणा नहा-धोकर, खा-पीकर लेटने लगी, तभी उसकी नजर चित्रा के नए चित्रों की ओर गई। तीन चित्र बने रखे थे। तीनों बाढ़ के चित्र थे। जो द श्य वह अपनी आँखों से देखकर आ रही थी, वैसे ही द श्य यहाँ भी अंकित थे। उसका मन जाने कैसा-कैसा हो आया। वहाँ लोगों के जीने के लाले पड़ रहे हैं और उसमें भी इसे चित्रकारी ही सूझती है। और न जाने कितनी बात सोचते-सोचते वह सो गई।

शब्दार्थ

लोहा मानना – मन से बात को स्वीकार करना, सम्मान करना

कायल होना – किसी की बात स्वीकार करना, लाजवाब होना

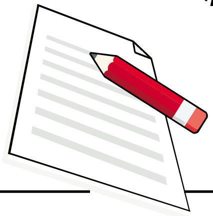

टिप्पणी

शाम को चित्रा लौटी तो अरुणा को देखकर बड़ी प्रसन्न हुई। 'गनीमत है, तू लौट आई। मैं सोच रही थी कि कहीं तू बाढ़-पीड़ितों की सेवा करती ही रह जाए और मैं जाने से पहले तुझसे मिल भी न पाऊँ।'

'क्यों, तेरा जाने का तय हो गया?'

'हाँ, अगले बुध को मैं घर जाऊँगी और बस एक सप्ताह बाद हिंदुस्तान की सीमा के बाहर पहुँच जाऊँगी।' उल्लास उसके स्वर से छलक पड़ रहा था।

'सच कह रही है, तू चली जाएगी चित्रा! छह साल से तेरे साथ रहते-रहते मैं तो यह बात भूल ही गई कि कभी हमको अलग भी होना पड़ेगा। तू चली जाएगी तो मैं कैसे रहूँगी?'

'अरे, दो महीने बाद शादी कर लेगी, फिर याद भी न रहेगा कि कौन कंबख्त थी चित्रा! बड़ी लालसा थी तेरी शादी में आने की , पर अब तो आ नहीं सकूँगी। अच्छी तरह शादी करना, दोनों मिलकर सारे समाज का और सारे संसार का कल्याण करना।'

पर अरुणा के कानों में उसकी कोई भी बात नहीं पड़ रही थी। चित्रा के साथ बिताए हुए पिछले छह सालों के चित्र उसकी आँखों के सामने घूम रहे थे और वह उन्हीं में खोई बैठी रही।

शब्दार्थ

विराट	–	बड़ा
सपने साकार होना	–	सोची हुई बात सच होना
अवाक्	–	आश्चर्य, चुप

'क्या सोचने लगी रूनी ! मनोज की याद आ गई क्या?'

'चल हट! हर समय का मज़ाक अच्छा नहीं लगता।'

उस दिन रात में भी अरुणा अपने और चित्रा के बारे में ही सोचती रही। दोनों के आचार-विचार, रहन-सहन, रुचि आदि में ज़मीन-आसमान का अंतर था, फिर भी कितना स्नेह था दोनों में। सारा हॉस्टल उनकी मित्रता को ईर्ष्या की नज़र से देखता था। जब उसके बी.ए. के इम्तिहान थे तो चित्रा कितना खयाल रखती थी उसका। वह अक्सर चित्रा को डाँट दिया करती थी, पर कभी उसने बुरा नहीं माना। यही चित्रा जब चली जाएगी– बहुत-बहुत दूर। ये दो महीने भी कैसे निकालेगी? और यही सब सोचते-सोचते उसे नींद आ गई।

आज चित्रा को जाना था। हॉस्टल में उसे बड़ी शानदार विदाई मिली थी। अरुणा सवेरे से ही उसका सारा सामान ठीक कर रही थी। एक-एक करके चित्रा सबसे मिल आई। फिर गुरु जी के घर की तरफ़ चल पड़ी। तीन बज गए, पर वह लौटी नहीं। अरुणा उसका सारा काम समाप्त करके उसकी राह देख रही थी। और भी कई लड़कियाँ वहाँ जमा थीं, कुछ बार-बार आकर पूछ जाती थीं, चित्रा लौटी या नहीं। पाँच बजे की गाड़ी से वह जाने वाली है। अरुणा ने सोचा, वह खुद जाकर देख आए कि आखिर बात क्या हो गई। तभी हड़बड़ाती-सी चित्रा ने प्रवेश किया, 'बड़ी देर हो गई ना। अरे, क्या करूँ, बस, कुछ ऐसा हो गया कि रुकना ही पड़ा।'

'आखिर क्या हो गया ऐसा, जो रुकना ही पड़ा, सुनें तो।' दो-तीन कंठ एक साथ बोले।'

'गर्ग-स्टोर के सामने पेड़ के नीचे अक्सर एक भिखारिन बैठी रहा करती थी ना, लौटी तो देखा कि वह वहीं मरी पड़ी है और उसके दोनों बच्चे सूखे शरीर से चिपककर बुरी तरह रो रहे हैं। जाने क्या था उस सारे द श्य में, कि मैं अपने को रोक नहीं सकी – एक रफ-सा स्केच बना ही डाला। बस, इसी में इतनी देर हो गई।' चर्चा इसी पर चल पड़ी, कैसे मर गई, कल तो उसे देखा था।' किसी ने दार्शनिक की मुद्रा में कहा, 'अरे,

जिंदगी का क्या भरोसा, मौत कहकर थोड़े आती है।' आदि-आदि। पर इस सारी चर्चा से अरुणा कब खिसक गई, कोई जान ही नहीं पाया।

साढ़े चार बजे और चित्रा हॉस्टल के फाटक पर आ गई, पर तब तक अरुणा का कहीं पता नहीं था। बहुत सारी लड़कियाँ उसे छोड़ने स्टेशन आईं, पर चित्रा की आँखें बराबर अरुणा को ढूँढ़ रही थीं। उसे द ढ़ विश्वास था कि वह इस विदाई की बेला में उससे मिलने ज़रूर आएगी। पाँच भी बज गए, रेल चल पड़ी, अनेक रूमालों ने हिल-हिलकर चित्रा को विदाई दी, पर उसकी आँखें किसी और को ही ढूँढ़ रही थी– पर अरुणा न आई सो न आई।

विदेश जाकर चित्रा तन-मन से अपने काम में जुट गई, उसकी लगन ने उसकी कला को निखार दिया। विदेशों में उसके चित्रों की धूम मच गई। भिखमंगी और दो अनाथ बच्चों के उस चित्र की प्रशंसा में तो अखबारों के कॉलम भर गए। शोहरत के ऊँचे कगार पर बैठ, चित्रा जैसे अपना पिछला सब कुछ भूल गई। पहले वर्ष तो अरुणा से पत्र-व्यवहार बड़े नियमित रूप से चला, फिर कम होते-होते एकदम बंद हो गया। पिछले एक साल से तो उसे यह भी नहीं मालूम कि वह कहाँ है। नई कल्पनाएँ और नए-नए विचार उसे नवीन स जन की प्रेरणा देते और वह उन्हीं में खोई रहती। उसके चित्रों की प्रदर्शनियाँ होतीं। अनेक प्रतियोगिताओं में उसका 'अनाथ' शीर्षकवाला चित्र प्रथम पुरस्कार पा चुका था। जाने क्या था उस चित्र में, जो देखता, वही चकित रह जाता। दुख-दारिद्रय और करुणा जैसे साकार हो उठे थे। तीन साल बाद जब वह भारत लौटी तो बड़ा स्वागत हुआ उसका। अखबारों में उसकी कला पर, उसके जीवन पर अनेक लेख छपे। पिता अपनी इकलौती बिटिया की इस कामयाबी पर गद्गद थे – समझ नहीं पा रहे थे कि उसे कहाँ-कहाँ उठाएँ, बिठाएँ। दिल्ली में उसके चित्रों की प्रदर्शनी का विराट आयोजन किया गया। उद्घाटन करने के लिए उसे ही बुलाया गया था। उस प्रदर्शनी को देखने के लिए जनता उमड़ पड़ी थी, भूरि-भूरि प्रशंसा हो रही थी और चित्रा को लग रहा था, जैसे उसके सपने साकार हो गए। उस भीड़-भाड़ में अचानक उसकी भेंट अरुणा से हो गई ! 'रूनी' ! कहकर वह भीड़ की उपस्थिति को भूलकर अरुणा के गले से लिपट गई– 'तुझे कब से चित्र देखने का शौक हो गया, रूनी!' 'चित्रों को नहीं, चित्रा को देखने आई थी। तू तो एकदम भूल ही गई।'

'अरे, ये बच्चे किसके हैं? दो प्यारे-से बच्चे अरुणा से सटे खड़े थे। लड़के की उम्र दस साल की होगी तो लड़की की कोई आठ।

'मेरे बच्चे हैं, और किसके ! ये तुम्हारी चित्रा मासी है, नमस्ते करो अपनी मासी को।' अरुणा ने आदेश दिया।

बच्चों ने बड़ी अदा से नमस्ते किया। पर चित्रा अवाक् होकर कभी उनका और कभी अरुणा का मुँह देख रही थी। वह सारी बात की तुक नहीं मिला पा रही थी। तभी अरुणा ने टोका, 'कैसी मासी है, प्यार तो कर।' और चित्रा ने दोनों के सिर पर हाथ फेरा। प्यार का ज़रा-सा साहस पाकर लड़की चित्रा की गोदी में जा चढ़ी। अरुणा ने कहा, 'तुम्हारी ये मासी बहुत अच्छी तस्वीरें बनाती है, ये सारी तस्वीरें इन्हीं की बनाई हुई हैं।'

'सच ?' आश्चर्य से बच्ची बोल पड़ी। 'तब तो मासी, तुम जरूर ड्रांइग में फर्स्ट आती होगी। मैं भी अपनी क्लास में फर्स्ट आती हूँ – तुम हमारे घर आओगी तो अपनी कॉपी दिखाऊँगी।' बच्ची के स्वर में मुकाबले की भावना थी। चित्रा और अरुणा इस बात पर हँस पड़ीं।

'आप हमें सब तस्वीरें दिखाइए मासी, समझा-समझाकर।' बच्चे ने फरमाइश की। चित्रा समझाती हुई तस्वीरें दिखाने लगी। घूमते-घूमते वे उसी भिखारिन वाली तस्वीर के सामने आ पहुँचे। चित्रा ने कहा, 'यही वह तस्वीर है रूनी, जिसने मुझे इतनी प्रसिद्धि दी।'

'ये बच्चे रो क्यों रहें हैं, मासी?' तस्वीर को ध्यान से देखकर बालिका ने कहा!

'इनकी माँ मर गई, देखती नहीं मरी पड़ी है। इतना भी नहीं समझती।' बालक ने मौका पाते ही अपने बड़प्पन की छाप लगाई।

'ये सचमुच के बच्चे थे, मासी? बालिका का स्वर करुण से करुणतर होता जा रहा था।

'अरे, सचमुच के बच्चों को देखकर ही तो बनाई थी यह तस्वीर!'

चित्र 8.3

'हाय राम! इनकी माँ मर गई तो फिर इन बच्चों का क्या हुआ?' बालक ने पूछा।

'मासी, हमें ऐसी तस्वीर नहीं, अच्छी-अच्छी, तस्वीरें दिखाओ, राजा-रानी की, परियों की. .... उस तस्वीर को और अधिक देर तक देखना बच्चों के लिए असह्य हो उठा था। तभी अरुणा के पति आ पहुँचे। परिचय हुआ। साधारण बातचीत के पश्चात् अरुणा ने दोनों बच्चों को उनके हवाले करते हुए कहा, 'आप जरा बच्चों को प्रदर्शनी दिखाइए, मैं चित्रा को लेकर घर चलती हूँ।

बच्चे इच्छा न रहते हुए भी पिता के साथ विदा हुए। चित्रा को दोनों बच्चे बड़े ही प्यारे लगे। वह उन्हें एकटक देखती रही। जैसे ही वे आँखों से ओझल हुए उसने पूछा, 'सच-सच बता, रूनी! ये प्यारे-प्यारे बच्चे किसके हैं?

'कहा तो, मेरे।' अरुणा ने हँसते हुए कहा।

'अरे, बताओ ना! मुझे बेवकूफ़ बनाने चली है।'

'एक क्षण रुककर अरुणा ने कहा, 'बता दूँ?' और फिर उस भिखारिन वाले चित्र के दोनों बच्चों पर उँगली रखकर बोली, 'ये ही वे दोनों बच्चे हैं।'

'क्या.... !' विस्मय से चित्रा की आँखें फैली की फैली रह गईं।

'क्या सोच रही है, चित्रा?'

'कुछ नहीं – मैं सोच रही थी कि .... ' पर शब्द शायद उसके विचारों में ही खो गए।

– मन्नू भंडारी

8.2 बोध प्रश्न

आशा है आपको कहानी पसंद आई होगी। अब दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर इस कहानी पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. 'तो इसे दिखाने के लिए मेरी नींद खराब कर दी, बदतमीज़ कहीं की' अरुणा के इस कथन से कौन-सा भाव प्रकट होता है।

   (क) क्रोध — (ग) प्रेम

   (ख) खीझ — (घ) ईर्ष्या

2. 'इसमें तो सड़क, आदमी, ट्राम, बस, मोटर, मकान सब एक दूसरे पर चढ़े नज़र आते हैं' इस बात से किस ओर संकेत है?

   (क) यातायात समस्या — (ग) जनसंख्या की बढ़ोत्तरी

   (ख) दुनिया के कंफ्युजन — (घ) सड़क दुर्घटना

3. 'ठाठ तो हॉस्टल में अरुणा के ही हैं रात नौ बजे लौटो या दस, कोई बंधन नहीं,' इससे प्रकट होता है:

   (क) सविता की ईर्ष्या — (ग) वार्डन का विवेक

   (ख) अरुणा की परोपकार भावना — (घ) अरुणा की लोकप्रियता

4. अरुणा रात दस बजे कहाँ से लौटी?

   (क) सिनेमा हॉल से — (ग) बच्चों की पाठशाला से

   (ख) लाइब्रेरी से — (घ) फुलिया दाई के घर से

5. दोपहर से ही भूखी अरुणा ने रात को भी भोजन नहीं किया, क्योंकि

   (क) फुलिया दाई के बच्चे के दुख के कारण भूख मर गई थी।

   (ख) भोजन समाप्त हो चुका था।

   (ग) चित्रा को कष्ट नहीं देना चाहती थी।

   (घ) भोजन ठंडा था।

6. जब अरुणा रात देर से लौटी तो चित्रा
   (क) सो रही थी।
   (ख) पढ़ रही थी।
   (ग) बातें कर रही थी।
   (घ) चिंता में थी कि अभी तक अरुणा लौटी क्यों नहीं।
7. अरुणा और चित्रा के बीच क्या संबंध था?
8. अरुणा किसके बच्चे को बचा नहीं पाई?
9. चित्रा हॉस्टल छोड़ने के बाद कहाँ गई?

8.3 आइए समझें

8.3.1 'दो कलाकार' कथा के प्रमुख चरण

यह तो आप जान ही गए हैं चित्रा और अरुणा दो सखियाँ हॉस्टल में एक साथ रहती थीं। उनके व्यवहार और आदतों में अंतर होते हुए भी दोनों घनिष्ठ मित्र थीं। एक-दूसरे के सुख-दुख का ध्यान रखती थीं। आगे कहानी कुछ इस प्रकार आगे बढ़ती है।

- अरुणा का विवाह मनोज से निश्चित हो चुका है।
- चित्रा धनी पिता की इकलौती पुत्री है।
- अरुणा एक समाज सेविका है।
- चित्रा एक चित्रकार, प्रसिद्धि पाने की उत्सुक, जिसे गुरुजी का प्रोत्साहन प्राप्त है।
- अखबारों से पता चलता है कि लगातार मूसलाधार बारिश से बाढ़ आ गई है। बाढ़ पीढ़ितों की हालत बिगड़ चुकी है।
- अरुणा शिविर में जाती है और बाढ़ पीड़ितों की सेवा करती है।
- चित्रा उन पर आधारित चित्र बनाती है।
- 'गर्ग स्टोर' पर भिखारिन की म त्यु हो जाती है। चित्रा उस मरी हुई भिखारिन और उसके बच्चों का चित्र बनाती है और फिर चली जाती है। भिखारिन वाले चित्र पर चित्रा को विशिष्ट पुरस्कार मिलता है।
- चित्रा विदेश से वापस आती है और भव्य प्रदर्शनी का आयोजन करती है, जिसमें उसे अपूर्व प्रसिद्धि मिलती है।
- प्रदर्शनी में अरुणा का चित्रा से मिलन होता है।
- अरुणा के साथ दो बच्चों को देख कर चित्रा अवाक् रह जाती है।
- चित्रा को पता चलता है कि अरुणा के साथ आए दोनों बच्चे उसी भिखारिन के हैं –जिसका चित्र उसने बनाया था।
- वह खुद को अरुणा के सामने बहुत छोटा महसूस करती है।

मन्नू भंडारी ने कहानी में एक ही पद्धति को अपनाया है, पहले कुछ स्थितियों को बताया है और बाद में एक घटना प्रस्तुत की है।

8.3.2 कहानी कैसे पढ़ें

आपने कई कहानियाँ पढ़ी होंगी। दरअसल, जहाँ एक ओर कहानी मनोरंजन का साधन है वहाँ दूसरी ओर किसी जीवन मूल्य की तरफ़ संकेत भी करती है। तभी तो दादा-दादी अथवा माँ आपको बचपन से ही कहानी सुनाते हैं। कहानी, राजा-रानी की और काल्पनिक परियों से लेकर पौराणिक, वैज्ञानिक, ऐतिहासिक, सामाजिक आदि किसी भी विषय से जुड़ी हो सकती है। यह जीवन की कई घटनाओं पर आधारित होती है। तभी तो सुप्रसिद्ध कहानीकार प्रेमचंद ने कहा है कि कहानी 'एक गमला है तो उपन्यास पूरा उद्यान।'

किसी भी कहानी को अच्छी तरह से समझने के लिए हम उसके छह तत्त्वों का अध्ययन करते हैं:

1. कथावस्तु
2. देशकाल तथा वातावरण
3. चरित्र-चित्रण
4. कथोपकथन अथवा संवाद
5. उद्देश्य
6. भाषा-शैली

लेकिन कभी-कभी इनमें से कोई एक तत्त्व नहीं भी होता।

आइए, पढ़कर देखते हैं कि 'दो कलाकार' कहानी में ये सभी तत्त्व किस प्रकार मौजूद हैं।

1. कथावस्तु

कथावस्तु का निर्माण घटनाओं और पात्रों के संयोग से होता है। वास्तव में लेखक अपने कथ्य के अनुसार ही कथावस्तु का स्वरूप तैयार करता है। उसी के अनुसार कभी घटनाओं की प्रधानता हो जाती है, कभी चरित्र और कभी वातावरण की। इस कहानी में वातावरण की कोई विशेष भूमिका नहीं है। केवल छात्राओं के हॉस्टल का परिवेश दिखाया गया है और उसी के इर्द-गिर्द रहने वाले लोगों की सेवा में जुटी अरुणा को कलाकार कहा गया है।

कहानी के शुरू में छात्रावास में रहने वाली चित्रा और अरुणा की रुचियों, उपहास-व त्ति और प्रगाढ़ मैत्री को संवादों, हरकतों और कार्यों से रेखांकित किया गया है। इस घटना से न केवल अरुणा की सेवाभावना का पता चलता है बल्कि छात्रावास की छात्रा सविता की ईर्ष्या और आरामपरस्ती की व त्ति का भी पता चलता है। इस प्रकार कहानी के पहले अंश में संवादों और घटनाओं के माध्यम से कहानी को आगे बढ़ाया गया है। कहानीकार

टिप्पणी

ने अपने कथ्य को संवादों के जरिए स्पष्ट किया है। अरुणा कागज़ पर चित्र बनाने की बजाए लोगों की ज़िंदगी बनाना ज़्यादा श्रेयस्कर समझती है। अरुणा का यह संवाद कि *'किस काम की ऐसी कला जो आदमी को आदमी न रहने दे'* ही कहानी का मूल संदेश है। इसी को स्पष्ट करने के लिए दोनों सखियों की भिन्न-भिन्न रुचियों और मनोव त्तियों को संवादों के माध्यम से विस्तार दिया गया है। बाढ़-पीड़ितों की सेवा वाली घटना और भिखारिन के रोते हुए दोनों बच्चों वाली घटना से दोनों सखियाँ जुड़ी हुई हैं। चित्रा इन घटनाओं के चित्र बनाती है। किंतु अरुणा उनकी सेवा करके उन्हें जीवनदान देती है। पूरा कथानक रंगों और लकीरों की बजाए मानवसेवा को महत्त्व देने के लिए गढ़ा गया है।

कहानी का अंतिम भाग भी संवादों और घटना से ही विस्तार पाता है। यह खंड दोनों सखियों में चली आ रही उस बहस का भी अंत कर देता है जो अपने-अपने कामों को उत्तम सिद्ध करना चाहती थीं। अपनी चित्र प्रदर्शनी में अरुणा के साथ आए दोनों बच्चों को देखकर चित्रा चकित होती है। और जब उसे यह पता चलता है कि वे दोनों म त भिखारिन के बच्चे हैं, जिसका उसने स्केच बनाकर प्रसिद्धि पाई है, तो उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहता। वह स्वयं को छोटा महसूस करती है और अरुणा को महान कलाकार समझती है। इस प्रकार पूरी कहानी घटना और संवादों के माध्यम से सहज रूप से आगे बढ़ती है। कहीं से भी कथानक न तो अनगढ़ लगता है और न ही कृत्रिम। ऐसा लगता है कि जीवन का एक टुकड़ा पूरी सच्चाई, ईमानदारी और जीवंतता के साथ मूर्त कर दिया गया है।

पाठगत प्रश्न 8.1

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. कथानक के विस्तार में मुख्यतः सहायक होती है:
   (क) संवाद-घटनाएँ (ग) हास्य-वर्णन
   (ख) भाषा-शैली (घ) चरित्र-चित्रण
2. 'दो कलाकार' की कथावस्तु का मूल संदेश है:
   (क) कला का महत्त्व बताना
   (ख) समाजसेवा को भी कला सिद्ध करना
   (ग) कला साधना की अपेक्षा समाज-सेवा को महत्त्व देना
   (घ) कला और समाज-सेवा में प्रतिस्पर्धा दिखाना
3. अच्छी कथावस्तु में आवश्यक होती है:
   (क) सहजता (ग) अनगढ़ता
   (ख) क त्रिमता (घ) बनावट
4. यदि म त भिखारिन के बच्चे वाली घटना नहीं होती तो कथावस्तु
   (क) अधूरी रह जाती

(ख) उद्देश्य पूरा नहीं हो पाता

(ग) कला और सेवा में जुटी सखियों के विवाद का फैसला नहीं हो पाता

(घ) इनमें से कोई भी नहीं

5. कहानी का अंतिम भाग क्यों महत्त्वपूर्ण है?

---

2. देशकाल तथा वातावरण

आपने कई कहानियाँ पढ़ी या सुनी होंगी। उन्हें पढ़ने-सुनने के बाद क्या आप अंदाजा लगा पाते हैं कि वे किन स्थितियों में लिखी गई हैं या उनमें किस प्रकार की स्थितियों का वर्णन किया गया है। दरअसल कहानी लिखते समय और उसमें निहित स्थितियाँ ही देशकाल या वातावरण कहलाता है।

कहानी में देशकाल से आशय उन सामाजिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक स्थितियों से है जिनमें कहानी लिखी गई होती है या जिन्हें कहानी में उभारने की कोशिश की गई होती है। देश का अर्थ तो आप जानते ही हैं और काल का अर्थ होता है– समय यानी कहानी में देश की जिस सामाजिक और सांस्कृतिक स्थितियों तथा काल खंड का वर्णन मिलता है या परोक्ष रूप से ये दिखाई देते हैं उसे देशकाल कहा जाता है। वातावरण का आशय किसी भी काल खंड की स्थितियों से होता है। उदाहरण के लिए जब आप राजा-रानी की कोई कहानी पढ़ते हैं तो आपको स्पष्ट हो जाता है कि कहानी प्राचीन समय के वातावरण को उजागर कर रही है।

प्रस्तुत कहानी आधुनिक काल खंड में भारतीय समाज के वातावरण को दर्शाती है। चित्रा और अरुणा दो सहेलियाँ हैं जो हॉस्टल में रहती हैं। लेखिका ने उन्हें हॉस्टल में रहते हुए दिखा कर आधुनिक भारतीय समाज के वातावरण को दर्शा दिया है। क्योंकि आधुनिक काल से पहले लड़कियों का इस तरह से कहीं बाहर रहना और अपनी मर्ज़ी से काम करना प्रचलन में नहीं था। इसऽकहानी में दोनों सहेलियाँ स्वतंत्र हैं, खुले विचारों की हैं। दोनों अपने पुरुष मित्रों के बारे में खुलकर बातें करती हैं और इसे बुरा नहीं मानतीं। आधुनिक शिक्षा और सोच के कारण किस तरह हमारे समाज में बदलाव आया है उससे समाज में महिलाओं की आज़ादी, उन्हें भी पुरुषों की तरह अपने जीवन का निर्णय लेने और समय से काम करने की परंपरा विकसित हुई है। इस कहानी में इस काल खंड़ की प्रव त्तियों को साफ़ देखा जा सकता है। दोनों में भरपूर आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता है।

पाठगत प्रश्न 8.2

दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प छाँट कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. 'दो कलाकार' कहानी में किस काल खंड का वातावरण दिखाई देता है–

(क) प्राचीन (ग) आधुनिक

(ख) मध्यकालीन (घ) मिलाजुला

2. 'दो कलाकार' कहानी में दोनों सहेलियों पर कौन-सा कथन लागू नहीं होता?

(क) दोनों स्वतंत्र विचारों की हैं।

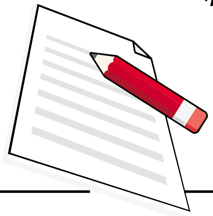

टिप्पणी

(ख) दोनों अपने पुरुष मित्रों के बारे में खुलकर बातें करती हैं।

(ग) दोनों अपने माता-पिता की डाँट पर सहमी-सहमी रहती हैं।

(घ) दोनों ही अपने-अपने कार्य-क्षेत्र में आत्मविश्वासी हैं।

3. राजा-रानी की कथा किस काल से संबंधित हो सकती है?

---

3. चरित्र-चित्रण

कहानी को पढ़ते हुए आपने जान लिया होगा कि इसमें मुख्यतः दो ही पात्र हैं अरुणा और चित्रा। इस कहानी में छात्रावास और शहरी जीवन का परिवेश है। छात्रावास की अन्य छात्राओं की उपस्थिति कहानी में है, किंतु पूरी कहानी में यही दोनों पात्र छाए हुए हैं। हाँ, कुछ समय के लिए 'सविता' और 'शीला' भी दिखाई पड़ती हैं, जिनमें सविता की अरुणा के प्रति ईर्ष्या और शीला की सम्मान-भावना दिखाई देती है। कहानी में अरुणा की करुणा और कर्मनिष्ठा को स्पष्ट किया गया है। उसकी सत्कर्म प्रव त्ति ने सभी को प्रभावित किया है, चाहे हॉस्टल की वार्डन हो या फिर कॉलेज की प्रिंसिपल।

आइए अब इन दोनों प्रमुख पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं के बारे में विस्तार से जानें।

अरुणा

अरुणा एक मध्यमवर्गीय परिवार की लड़की है जो संस्कारों से परोपकारी तथा कर्म के प्रति समर्पित है। वह समाज सेवा के लिए हमेशा तैयार रहती है। कभी वह आस-पास के बच्चों को पढ़ाती है तो कभी बाढ़ पीड़ितों के लिए चंदा इकट्ठा करने में व्यस्त रहती है। इन कार्यों की वजह से वह अपनी पढ़ाई की भी उपेक्षा कर देती है इसलिए उसकी सखी चित्रा उसे पढ़ाई के प्रति सचेत करते हुए कहती है *'तेरे इम्तिहान सिर पर आ रहे हैं कुछ पढ़ती-लिखती तू है नहीं, सारे दिन बस भटकती रहती है।'* अरुणा के हृदय में समाज-सेवा के लिए इतना उत्साह है कि वह प्रधानाचार्य से स्वयंसेवकों के दल के साथ जाने के लिए अनुमति पा लेती है। संवेदनशील अरुणा बाढ़ पीड़ितों की सेवा में दिन-रात एक कर देती है और भूख-प्यास की परवाह किए बिना समाज सेवा में लगी रहती है। परिणाम यह होता है कि मात्र पंद्रह दिन में ही वह ऐसी लगती है मानो छह महीने से बीमार हो।

दरअसल अरुणा के स्वभाव में रोगियों, दुखियों के लिए अपार प्रेम है। जब वह फुलिया दाई के बच्चे की बीमारी के बारे में सुनती है तो फ़ौरन उसकी सेवा में तत्पर हो जाती है। सेवा करने के बावजूद वह बच्चे को नहीं बचा पाती। इस घटना से वह इतनी दुखी होती है कि दिन-भर भूखे रहने के बाद भी वापस हॉस्टल लौटने पर भोजन नहीं करती। वह इतनी करुणाशील है कि चित्रा जब इस संबंध में उससे कुछ पूछती है तो वह उत्तर तक नहीं दे पाती और उसकी आँखें छलछला जाती हैं। बच्चे की म त्यु के दुःख से अरुणा इतनी व्यथित हो उठती है कि वह कई दिनों तक उदास रहती है और आखिर चित्रा को कहना ही पड़ता है *'जो होना था हो गया अब भूखे रहने से क्या होगा, थोड़ा-बहुत खा ले।'*

यद्यपि कहानी के आरंभ में अरुणा की उपहास व त्ति का पता चलता है किंतु वास्तविकता यह है कि स्वभाव से वह गंभीर है इसलिए चित्रा के यह कहने पर कि *'क्या सोचने लगी रूनी, मनोज की याद आ गई क्या'* वह उसे झिड़कते हुए कहती है कि *'हर समय का मजाक अच्छा नहीं लगता'*। जीवन के उपयोगी और रंजक पक्षों में से अरुणा को उपयोगी पक्ष ही बेहतर लगता हैं। वह लोगों के दुख-दर्द को हर लेने में ही जीवन की

सार्थकता समझती है। वह चित्रा से कहती है, *'कागज़ पर निर्जीव चित्रों को बनाने की बजाय दो चार की ज़िंदगी क्यों नहीं बना देती। तेरे पास सामर्थ्य भी है और साधन भी किस काम की ऐसी कला जो आदमी को आदमी न रहने दे।'* वह कला और जीवन को लेकर कई बार चित्रा से बहस करती दिखाई देती है।

अरुणा न केवल समाज सेविका है बल्कि अपने संबधों के प्रति भी पूर्णतः जागरूक है। वह अपनी सखी चित्रा का बराबर ध्यान रखती है। जब वह चित्रा के विदेश जाने की बात सुनती है तो उसके साथ बिताए छह वर्षों के चित्र उसकी आँखों के सामने घूमने लगते हैं। वह उन्हीं में खो जाती है और कहती है, *'छह साल तेरे साथ रहते-रहते मैं तो ये भूल गई कि एक दिन हमको अलग होना पड़ेगा। तू चली जाएगी तो मैं कैसे रहूँगी।'* विदेश गमन के समय चित्रा तो अन्य छात्राओं से मिलने चली जाती है किंतु अरुणा उसका सारा सामान तैयार करती है। जब चित्रा गुरु जी के पास से वापिस नहीं लौटती तो उसे बेचैनी होती है और उसे देखने जाने के लिए तत्पर हो उठती है।

अरुणा के ह्रदय में दूसरों के लिए इतना दर्द है कि वह हर परिस्थिति में उसकी सहायता करना चाहती है। 'गर्ग स्टोर' के सामने वाले पेड़ के नीचे बैठने वाली भिखारिन की घटना सुनते ही वह अपनी सखियों को छोड़ उसे देखने चली जाती है। वहाँ भिखारिन के बच्चों को सँभालने में वह इतनी तल्लीन हो जाती है कि अपनी प्रिय सखी को विदा करने के लिए स्टेशन पर भी नहीं जा पाती। वह भिखारिन के रोते-चीखते दोनों बच्चों को सँभालती है और उन्हें अपने पास रख कर भरण-पोषण करके नया जीवन देती है।

अरुणा के इस प्रेम भाव से चित्रा भी चकित रह जाती है। जब अरुणा चित्रा की चित्र प्रदर्शिनी में अपने साथ म त भिखारिन के दोनों बच्चों को लाती है और चित्रा को पता चलता है कि ये दोनों बच्चे वे ही हैं जिनकी वजह से उसे इतनी प्रसिद्धि मिली है तो विस्मय से उसकी आँखें फैली की फैली रह जाती हैं। वस्तुतः उसी दिन उसे इस बात का अहसास होता है कि वास्तविक कला तो दूसरों को जीवन देना है जिसे उसकी सखी अरुणा ने इन दो बच्चों को दिया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अरुणा के ह्रदय में सच्ची संवेदना है। दया, करुणा, मैत्री, परोपकार तथा सहानुभूति से भरा उसका ह्रदय कर्म के प्रति अनुप्रेरित करता रहता है।

चित्रा

चित्रा धनी पिता की इकलौती संतान है। वह चित्रकला की छात्रा है और महत्त्वाकांक्षी है। कोई भी चित्र जब पूरा हो जाता है उसे दिखाने का उसे शौक है इसीलिए तो वह सोती हुई अरुणा को उठा कर अपना नया चित्र दिखाती है।

चित्रकला की लगन उसे इतनी है कि वह हर समय रंगों में डूबी रहती है, ऐसे में उसे दीन-दुनिया तक की खबर नहीं रहती। इसीलिए अरुणा उससे कहती है, 'तुझे दुनिया से कोई मतलब नहीं दूसरों से कोई मतलब नहीं, बस चौबीसों घंटे अपने रंग और तूलियों में डूबी रहती है। चित्रकला को वह इतना महत्त्व देती है कि हरेक घटना में अपनी कला के लिए आइडिया की तलाश में रहती है। अरुणा उससे कहती है कि, *'दुनिया में बड़ी*

से बड़ी घटना घट जाए पर यदि उसमें तेरे चित्र के लिए कोई आइडिया नहीं तो तेरे लिए उस घटना का कोई महत्त्व नहीं। बस हर घड़ी हर जगह तू मॉडल खोजा करती है। उसकी इस लगन को देखकर गुरुजी कहते हैं कि वह समय दूर नहीं जब हिन्दुस्तान के कोने-कोने में तेरी शोहरत गूँजेगी'। इस कला के लिए वह अपनी सखी अरुणा से बहस भी करती है और 'समाज-सेवा' से 'कला' को बेहतर मानती है। कला की साधना से ही वह देश-विदेश में ख्याति प्राप्त करती है। अखबार की सुर्खियों में होती है। उसके चित्रों की प्रदर्शनी चर्चा का विषय बनती है। वह प्रथम पुरस्कार जीतती है और सम्मान पाती है।

चित्र 8.4

कला में लगन के साथ-साथ चित्रा विनोदी स्वभाव की छात्रा है इसीलिए अपने हॉस्टल में वह इतनी लोकप्रिय है कि रेलवे स्टेशन पर अनेक छात्राएँ उसे विदा करने आती हैं। हॉस्टल में उसकी विदाई समारोह का आयोजन किया जाता है और गुरुजी के पास से लौटने में देरी होने पर सभी छात्राओं को उसकी चिंता रहती है।

चित्रा अपने मैत्री संबंधों का सदा ही ध्यान रखती है। वह अरुणा के फुलिया दाई के घर से लौटने पर खाना गर्म करने के लिए उठती है और अरुणा को खाना खिलाने का प्रयास करती है। वह बहुत स्नेह से अरुणा की पीठ थपथपाते हुए कहती है, *'जो होना था सो हो गया अब भूखे रहने से क्या होगा थोड़ा बहुत खा ले।'* कॉलेज से लौटते ही वह अरुणा के लिए चाय बनाती है। उसकी चिट्ठियों का ध्यान रखती है और यहाँ तक कि जब अरुणा बाढ़ पीड़ितों के लिए चंदा इकट्ठा करने का काम करती है तो वह चिन्तित हो कहती है कि *'तेरे इम्तिहान सिर पर आ रहे हैं कुछ पढ़ती-लिखती तो तू है नहीं, सारे दिन बस भटकती रहती है। फेल हो गई तो तेरे ससुर साहब क्या सोचेंगे।'*

इस प्रकार हम देखते हैं कि चित्रा जहाँ एक ओर कला के प्रति समर्पित है वहीं अपनी अनन्य मैत्री के प्रति निष्ठा से सब का दिल भी जीतती है।

पाठगत प्रश्न 8.3

1. अरुणा की कर्मनिष्ठा से कौन ईर्ष्या करता है?

   (क) चित्रा (ग) सविता

   (ख) शीला (घ) मनोज

2. किस घटना से अरुणा कई दिनों तक उदास रहती है?

   (क) भिखारिन की म त्यु से

   (ख) फुलिया दाई के बच्चे को नहीं बचा पाने से

   (ग) बाढ़ के दिनों में भी चित्रा के चित्र बनाने से

   (घ) चित्रा के हॉस्टल छोड़ने की घटना से

3. अरुणा चपरासी, दाई आदि के बच्चों को पढ़ाती है, क्योंकि

   (क) वह यश चाहती है (ग) समाज-सेवा करना चाहती है

   (ख) पैसा चाहती है (घ) हॉस्टल से बाहर रहना चाहती है

4. 'तू चली जाएगी तो मैं कैसे रहूँगी' इस वाक्य से अरुणा का कौन-सा गुण स्पष्ट होता है।

   (क) दया (ग) मैत्री

   (ख) करुणा ऽ (घ) _क्रोध

5. भिखारिन के दो बच्चों के साथ अरुणा ने कैसा व्यवहार किया?

---

4. कथोपथकन अथवा संवाद-योजना

हम बात कर चुके हैं, कहानी में संवाद योजना भी एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व होता है। क्या आप बता सकते हैं कि संवाद किसे कहते हैं? फिल्में तो आप सभी देखते हैं, नाटक भी खेलते व देखते होंगे। उसमें पात्र आपस में बातचीत करते हैं उसे क्या कहते हैं? संवाद या डायलाग। कहानी में भी जब पात्र आपस में बातचीत करते हैं तो उसे संवाद कहा जाता है। प्रस्तुत कहानी 'दो कलाकार' संवादात्मक शैली में लिखी गई है। छोटे-छोटे संवादों के माध्यम से कहानी को विकसित किया गया है। कहानी जहाँ हास-उपहास से आरंभ होती है वहीं इसका अंत अत्यंत कारुणिक है। अंतिम घटना दो कलाकारों में से एक को कहीं अधिक उदास बना देती है। पूरी कहानी में आम बोल-चाल के छोटे-छोटे संवाद हैं।

मन्नू भंडारी की इस कहानी की दूसरी विशेषता है – आत्मीयता। अरुणा और चित्रा के इन संवादों से उनके आत्मीय व्यवहार को देखिए–

1. *'ऐ रूनी उठ'*

   'अरे क्या है?'

   'देख मेरा चित्र पूरा हो गया।'

   'ओह! तो दिखाने के लिए तूने मेरी नींद खराब कर दी बदतमीज़ कहीं की!'

2. *चित्र को घुमाते हुए अरुणा बोली 'किधर से देखूँ यह तो बता दे। हज़ार बार कहा है जिसका चित्र बनाए उसका नाम लिख दिया कर, जिससे गलतफ़हमी न हुआ करे, वरना तू बनाए हाथी और हम समझें उल्लू।'*

3. *'ज़रा सोचकर बता यह किसका प्रतीक है।'*

   'तेरी बेवकूफ़ी का'

उक्त अंश में ऐसा आत्मिक व्यवहार है कि कहानी-कहानी न लगकर जीवन का सच्चा प्रतिबिंब लगती है। दोनों सहेलियों के संवादों में उपहास, छेड़छाड़ और एक-दूसरे के लिए बेचैनी साफ़ दिखाई देती है।

5. कहानी का उद्देश्य

आप जानते हैं हर रचना का कोई-न-कोई उद्देश्य होता है। लेखक इस रचना के माध्यम से कोई-न-कोई संदेश देना चाहता है। कहानीकार मन्नू भंडारी द्वारा लिखित इस कहानी का उद्देश्य समाज-सेवा को कला का दर्जा देना है। चित्रों की अपेक्षा समाज-सेवा में कला की सच्ची संवेदना है। दूसरों की पीड़ा से अनुप्रेरित होने के कारण समाज-सेवा, चित्रकला से अधिक उपयोगी है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कहानीकार ने ऐसी स्थितियों और घटनाओं का चयन किया है, जिसमें दोनों ही पक्ष हिस्सा लेते हैं, और अपने-अपने कार्यों की उत्तमता का दावा करते हैं।

कहानी के आरंभ में चित्रा कुछ लकीरें खींचकर दुनिया के श्रम को उजागर करती है, तो अरुणा हॉस्टल के इर्द-गिर्द रहने वाले बच्चों को पढ़ाकर और फुलिया दाई के बीमार बच्चे की सेवा करके सामाजिक-कार्यों में संलग्न रहती है। इसी तरह एक बाढ़-पीड़ितों के काल्पनिक चित्र तैयार करती है तो दूसरी उनके लिए चंदा इकट्ठा कर शिविर में जाती है और लोगों को जीवनदान देने के पुण्य कार्यों में जुटी हुई है।

तीसरे खंड में चित्रा एक भिखारिन के बच्चों का स्केच बनाती हैं और अरुणा भिखारिन की म त्यु के बाद उसके दोनों बच्चों को पालती-पोसती है।

कहानीकार ने इन सभी घटनाओं के माध्यम से समाज-सेवा को सहज रूप से उत्तम सिद्ध करना चाहा, और बताया कि मानवीय संवेदनाओं से भरा व्यक्ति ही सच्चा कलाकार हो सकता है। *'किस काम की ऐसी कला जो आदमी को आदमी न रहने दे', 'दुनिया की बड़ी से बड़ी घटना भी इसे आंदोलित नहीं करती, जब तक उसमें कला के लिए कोई स्थान न हो'* जैसे संवादों से कहानीकार ने अपने उद्देश्य को स्पष्ट किया है और सहज रूप से आई घटनाओं, चरित्रों तथा संवादों के माध्यम से अपने उद्देश्य प्राप्त करने में सफलता पाई है। घटनाओं के अतिरिक्त संवादों के माध्यम से भी उद्देश्य को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। चित्रा और अरुणा जहाँ अपने-अपने कार्य को

श्रेष्ठ बताती हैं वहीं उनके संवाद कहानी के उद्देश्य को रेखांकित करते हैं। चित्रा जहाँ बच्चों को पढ़ाने और फुलिया दाई के बीमार बच्चे की सेवा करने वाली घटना का मजाक उड़ाती है वहीं कहानी के अंत में अरुणा भी चित्रा द्वारा तैयार किए गए चित्र को चित्रा का कंफ्यूजन यानी भ्रम कहती है। अरुणा का यह संवाद कि *'किस काम की ऐसी कला जो आदमी को आदमी न रहने दे'* कहानी के उद्देश्य को स्पष्ट करता है। *'इन निर्जीव चित्रों की बजाए दो-चार की ज़िंदगी क्यों नहीं बना देती'* जैसे संवाद भी उद्देश्य को स्पष्ट करने में सहायक हैं। इस प्रकार संवादों के माध्यम से भी लेखिका ने कहानी के उद्देश्य को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

पाठगत प्रश्न 8.4

दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. कहानी के उद्देश्य को स्पष्ट करने में सर्वाधिक योगदान रहा है:
   (क) संवादों और चरित्रों का
   (ख) चरित्रों और घटनाओं का
   (ग) घटनाओं और संवादों का
   (घ) वातावरण और चरित्रों का

2. कहानी का मूल उद्देश्य है–
   (क) चित्रकला को श्रेष्ठ बताना
   (ख) समाज-सेवा को श्रेष्ठ बताना
   (ग) मानव मूल्यों को श्रेष्ठ बताना
   (घ) हर कला को श्रेष्ठ बताना

---

6. भाषा-शैली

मन्नू भंडारी नई कहानी के दौर की कथाकार हैं। इस दौर में कहानी की भाषा में एक गुणात्मक परिर्वतन आया है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता है– बोलचाल की भाषा। मन्नू भंडारी की इस कहानी में भाषा के उक्त सभी गुण दिखाई देते हैं। हाँ, परिवेश और पात्र के अनुसार भाषा बदलती रहती है। बोल-चाल की भाषा का नमूना देखिए–

1. *'क्यों बड़–बड़ कर रही है। ले मैं आ गई। चल, बना चाय'*
2. *'तेरे मनोज की चिट्ठी आई है।'*
   'तूने तो पढ़ ली होगी, फाड़कर।'
   'चल हट।'
3. *'नहीं चित्रा, अब रहने दे, बस तू लैंप बुझा दे।'*

कहानी की भाषा में कहीं भी ऐसा नहीं लगता कि वह जबरदस्ती ठूँसी गई है। भाषा सब जगह सरलता, सहजता, और बोलचाल का गुण लिए हुए है। इसके लिए आपने देखा होगा कि वाक्य छोटे हैं तथा तद्भव और देशज शब्दावली के साथ-साथ बोलचाल की अंग्रेज़ी और उर्दू के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है।

अंग्रेज़ी शब्दों में लैक्चर, बोर, आइडिया, कंफ्यूजन, प्रिंसिपल, वार्डन जैसे अनेक शब्द हैं तो उर्दू के इम्तिहान, हुनर, बहस, अखबार, खस्ता, हालत आदि जैसे बोल-चाल के साधारण शब्दों का प्रयोग है।

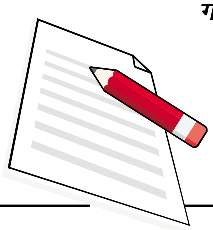

टिप्पणी

पूरी कहानी में ऐसा कहीं नहीं है कि वाक्य भारी और बोझिल हों या संवाद लंबे-चौड़े दार्शनिकता से भरे हों। संवाद छोटे, चुस्त और प्रिय है। देखिए–

1. *'मासी तुम जरूर ड्राइंग में फर्स्ट आती होगी।'*
   'तुम भी अपनी क्लास में फर्स्ट आती हो।'
   'तुम हमारे घर आओगी तो अपनी कॉपी दिखाउँगी।'
2. *'ये बच्चे क्यों रो रहे हैं मासी!'*
   'उनकी माँ मर गई, देखती नहीं मरी पड़ी है।'
   'ये सचमुच के बच्चे थे मासी।'
   'अरे सचमुच के बच्चे को देखकर ही तो बनाई थी यह तस्वीर।'

मन्नू जी की अपनी विशेषता है कि वे कहानी की स्थिति के अनुसार भाषा-व्यवहार का पूरा ध्यान रखती है।

पाठगत प्रश्न 8.5

1. अरुणा के इस कथन में भाषा की कौन-सी विशेषता है, 'क्यों बड़-बड़ करती है, ले मैं आ गई। चल, बना चाय'
   (क) संस्क त–निष्ठता (ग) आत्मीयता
   (ख) औपचारिकता (घ) क त्रिमता
2. नयी कहानी की भाषा बोल-चाल की है। इस कथन के आधार पर 'दो कलाकार' कहानी में बोल-चाल की भाषा के दो उदाहरण दीजिए:
   (क) ....
   (ख) ....

8.4 भाषा कार्य

- रचना की द ष्टि से वाक्य-भेद आप जान चुके हैं–सरल, संयुक्त और मिश्र वाक्य। आइए, अब कार्य की द ष्टि से वाक्य-भेद समझ लें, नीचे दिए हुए वाक्यों को पढ़िए:
  1. *चित्रा ने सोती हुई अरुणा को उठाया।*
  2. *'ऐ रूनी, उठ।'*
  3. *'अरे यह क्या?'*
  4. *'आ गए सब बच्चे?'*
  5. *'तेरी तरह लकीरें खींचकर समय बर्बाद नहीं करते।'*
  6. *'अम ता शेरगिल की तरह मेरा भी नाम गूँज उठे।'*
  7. *'ओह! तो इसे दिखाने के लिए तूने मेरी नींद खराब कर दी।'*
- ऊपर पहला वाक्य सामान्य सूचना दे रहा है। इसे **साधारण वाक्य** या **कथनात्मक वाक्य** कहते हैं। वाक्य 2 में आदेश/आज्ञा है। ऐसे वाक्य **आज्ञार्थक** कहे जाते हैं। वाक्य 3 और 4 में प्रश्न पूछे गए हैं इन्हें क्या कहेंगे? **प्रश्नार्थक।** वाक्य 5 में निषेध है क्योंकि यह नहीं या मना करने का अर्थ दे रहा है। इसे कहेंगे

निषेधार्थक। वाक्य 6 पढ़िए। इस वाक्य में चित्रा की मनोकामना है, इच्छा है, इसलिए ऐसे वाक्यों को **इच्छार्थक** कहते हैं। अंतिम वाक्य 'ओह' से प्रारंभ हो रहा है और मनोवेग को सूचित कर रहा है। ऐसे वाक्य मनोवेगात्मक वाक्य कहे जाते हैं। इस पाठ से ऐसे वाक्यों के और भी उदाहरण आप ढूँढ़ सकते हैं।

- अर्थ की द ष्टि से एक प्रकार की वाक्य रचना को आप दूसरी प्रकार की वाक्य रचना में बदल भी सकते हैं, जैसे–

  ⟹ **चित्रा ने सोई हुई अरुणा को उठाया** – **कथनात्मक**
  ⟹ चित्रा ने सोई हुई अरुणा को नहीं उठाया – **निषेधार्थक**
  ⟹ क्या चित्रा ने सोई हुई अरुणा को उठाया? – **प्रश्नार्थक**
  ⟹ चित्रा! सोई हुई अरुणा को उठाओ। – **आज्ञार्थक**
  ⟹ सोई हुई अरुणा उठे। – **इच्छार्थक**
  ⟹ काश, अरुणा उठती। – **मनोवेगात्मक**

- आम तौर पर निषेधार्थक वाक्यों में न, नहीं, मत, ना निपातों का प्रयोग होता है। किंतु हिंदी में इनके बिना भी निषेधार्थक वाक्य बनाए जाते हैं। ऐसे वाक्य बाहर से देखने पर कथनात्मक, प्रश्नात्मक या मनोवेगात्मक से प्रतीतऽहोते हैं। पर अर्थ की द ष्टि से ये निषेधार्थक होते हैं, जैसे–

  - हमें कोई शरम है क्या? ⟹ हमें शरम नहीं है।
  - क्या खाक काम करोगी। ⟹ काम नहीं करोगी।
  - तेरी इच्छा भी कभी टाली जा सकती है। ⟹ तेरी इच्छा नहीं टाली जा सकती।
  - मौत कह कर थोड़े ही आती है। ⟹ मौत कह कर नहीं आती।
  - अरे! ज़िंदगी का क्या भरोसा। ⟹ ज़िंदगी का भरोसा नहीं है।

पाठगत प्रश्न 8.6

1. निम्नलिखित वाक्यों का निर्देशानुसार रूपांतरण कीजिए:
   - कल तो उसे देखा था। (निषेधार्थक)
   - उसके चित्रों की प्रदर्शनियाँ होती थीं। (प्रश्नार्थक)
   - मैं अपने को रोक नहीं सकी। (मनोवेगात्मक)
   - क्या ये सचमुच के बच्चे थे, मासी? (कथनात्मक)
   - अरुणा सवेरे से ही उसका सामान ठीक कर रही थी। (इच्छार्थक)
2. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य प्रयोग इस प्रकार कीजिए कि अर्थ स्पष्ट हो जाए–
   - ढिंढोरा पीटना
   - छूट देना
   - बड़बड़ करना
   - सूरत निकल आना
   - आँखें फैली की फैली रहना
   - कायल होना

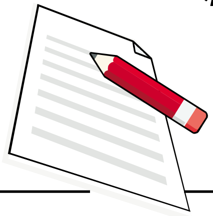

टिप्पणी

8.5 आपने क्या सीखा

1. कहानी पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, वैज्ञानिक आदि किसी भी पक्ष से जुड़ी हुई हो सकती है।
2. कहानी और उपन्यास में अंतर होता है। कहानी किसी एक घटना पर आधारित होती है, जबकि उपन्यास में कई घटनाएँ सम्मिलित होती हैं।
3. मुख्यतः किसी भी कहानी के छह तत्त्व होते हैं:
   1. कथावस्तु अथवा कथानक
   2. चरित्र-चित्रण
   3. देशकाल और वातावरण
   4. कथोपकथन या संवाद
   5. भाषा-शैली,
   6. उद्देश्य।

   परंतु कभी-कभी विषयानुसार कोई तत्त्व नहीं भी होता।
4. 'दो कलाकार' कहानी का क्रम इस प्रकार है–
   - चित्रा और अरुणा दो अच्छी दोस्त। हॉस्टल में एक साथ रहना।
   - चित्रा का अपना नया चित्र अरुणा को दिखाना।
   - चित्रा का एक प्रतिभाशाली कलाकार होना।
   - अरुणा का गरीबों के बच्चों को पढ़ाना और फुलिया दाई के बच्चे को बचाने का प्रयास करना।
   - चित्रा का म त भिखारिन और उसके बच्चों का चित्र बनाना और विदेश गमन।
   - चित्रा का देश-विदेश में ख्याति प्राप्त करना।
   - अरुणा का म त भिखारिन के बच्चों का गोद लेना।
   - दोनों सखियों का मिलन और एक की श्रेष्ठता।
5. कहानी के संवादों से दोनों सखियों की उपहास व त्ति की झलक मिलती है।
6. संवाद छोटे, मुहावरेदार, असरदार और सरल हैं।
7. भाषा आत्मीयता और सहजता के गुणों से युक्त है।

8.6 योग्यता विस्तार

1. **लेखक परिचय**

   मन्नू भंडारी नए दौर के कहानीकारों में अग्रणी स्थान रखती हैं। इनका जन्म 3 अप्रैल 1931 ई0 को भानपुरा, राजस्थान में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा अजमेर में हुई। काशी हिंदू विश्वविद्यालय से हिंदी में एम. ए. करने के बाद कलकत्ता में अध्यापन-कार्य करने लगीं। कुछ समय बाद इनकी नियुक्ति दिल्ली विश्वविद्यालय में प्राध्यापिका के पद पर हो गई। आपने अधिकतर सामाजिक और मनोवैज्ञानिक लेखन किया है। आपके प्रमुख कहानी संग्रह हैं– *'मैं हार गई', 'एक प्लेट सैलाब', 'तीन निगाहों की एक तस्वीर', 'यही सच है'* आदि। इनके *'महाभोज'* और *'आपका बंटी'* प्रसिद्ध उपन्यास हैं।' 2006 में सलाका सम्मान से अलंकृत।
2. सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार प्रेमचंद की सुप्रसिद्ध कहानियाँ–'पंच परमेश्वर', 'दो भाई', 'सुजान भगत', 'घर जमाई', 'बड़े भाई साहब' आदि में से कुछ कहानियाँ ढूँढ़ कर पढ़िए।

टिप्पणी

3. हिंदी पत्र-पत्रिकाओं से किसी एक कहानी को पढ़कर तत्त्वों के आधार पर उसकी विवेचना कीजिए।

8.7 पाठांत प्रश्न

1. चित्रा चित्रकला से जुड़ी है और अरुणा समाज-सेवा से। क्या इस द ष्टि से अरुणा को भी कलाकार माना जा सकता है? यदि नहीं, तो शीर्षक की सार्थकता पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
2. इस कहानी के प्रारंभ, विकास और अंत के संबंध में अपने विचार प्रकट कीजिए।
3. क्या अरुणा को भी 'कलाकार' कहा जाना चाहिए अपने उत्तर का तर्क सहित विवेचन कीजिए।
4. अरुणा को बच्चे क्यों बुलाने आए?
5. अरुणा देर रात हॉस्टल में कहाँ से लौटी थी और क्यों?
6. देर रात आने पर अरुणा ने भोजन क्यों नहीं किया?
7. कहानी में से उन पक्तियों को छाँटिए जो कहानी के उद्देश्य को स्पष्ट करती हैं।
8. म त भिखारिन और उसके सूखे शरीर से चिपके हुए दो बच्चों वाली घटना सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण क्यों है? विवेचन कीजिए।
9. अरुणा और चित्रा में से यथार्थवादी कौन हैं और आदर्शवादी कौन? उदाहरणों से अपने मत की पुष्टि कीजिए।
10. अरुणा में कौन से गुण थे जिनसे प्रिंसिपल तथा वार्डन भी उसका रौब मानती थीं।
11. कहानी में आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया गया है, सिद्ध कीजिए।
12. आज मानव ने पर्यावरण के साथ छेड़-छाड़ की है, जिस कारण से प्रकृति को अनेक विद्रूप स्थितियों का सामना करना पड़ता है। जगह-जगह बाढ़ आने के अन्य कारणों के बारे में पता लगाकर लिखिए।
13. बाढ़ की सूचना पाने पर एक सभ्य नागरिक के रूप में आपकी क्या भूमिका रहेगी?
14. आपको पुस्तक मेले में एक रोता हुआ बच्चा मिलता है तब आप क्या करें, विस्तार से लिखिए।
15. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–
...1947... मनिहारी (तब पूर्णियाँ अब कटिहार जिला!) के इलाके के गुरुजी के साथ गंगा मैया की बाढ़ से पीड़ित क्षेत्र में हम नाव पर जा रहे हैं। चारों ओर पानी ही पानी। दूर, एक 'द्वीप' जैसा बालूचर दिखायी पड़ा। हमने कहा, वहाँ चलकर जरा चहलकदमी करके टाँगें सीधी कर लें। भादुड़ीजी कहते हैं–''किन्तु, सावधान!... ऐसी जगहों पर कदम रखने के पहले यह मत भूलना कि तुमसे पहले ही वहाँ हर तरह के प्राणी शरणार्थी के रूप में मौजूद मिलेंगे'' और सचमुच–चींटी-चींटे से लेकर साँप-बिच्छू और लोमड़ी–सियार तक यहाँ पनाह ले रहे थे... भादुड़ीजी की हिदायत थी–हर नाव पर 'पकाही घाव' (पानी में पैर की उँगलियाँ सड़ जाती हैं। तलवों में भी घाव हो जाता है।) की दवा, दियासलाई की डिबिया और किरासन तेल रहना चाहिए और, सचमुच हम जहाँ जाते, खाने-पीने की चीज़ से पहले 'पकाही घाव' की दवा और दियासलाई की माँग होती...1949... उस बार महा-नन्दा की बाढ़ के घिरे वापसी थाना के एक गाँव में हम पहुँचे। हमारी नाव

पर रिलीफ़ के डॉक्टर साहब थे। गाँव के कई बीमारों को नाव पर चढ़ाकर कैंप में ले जा। एक बीमार नौजवान के साथ उसका कुत्ता भी 'कुँई-कुँई' करता हुआ नाव पर चढ़ आया। डॉक्टर साहब कुत्ते को देखकर 'भीषण भयभीत' हो गए और चिल्लाने लगे–"आ रे! कुकुर नहीं, कुकुर नहीं...कुकुर को भगाओ!" बीमार नौजवान छ्प-से पानी में उतर गया–"हमारा कुकुर नहीं जायेगा तो हमहुं नहीं जाएगा।" फिर कुत्ता भी छपाक् पानी में गिरा–"हमारा आदमी नहीं जाएगा तो हम हूँ नहीं जाएगा"...परमान नदी की बाढ़ में डूबे हुए एक 'मुहसरी' (मुहसरों की बस्ती) में हम राहत बाँटने गए। खबर मिली थी वे कई दिनों से मछली और चूहों को झुलसाकर खा रहे हैं। किसी तरह जी रहे हैं।

(क) लेखक नाव पर सवार होकर कहाँ और क्यों जा रहा था?

(ख) 'वहाँ हर तरह के प्राणी शरणार्थी के रूप में मौजूद मिलेंगे'–इससे आपने क्या समझा?

(ग) बीमार नौजवान और कुत्ता दोनों पानी में कूद गए, इसके पीछे एक–दूसरे के प्रति जो भावनाएँ हैं, उन्हें शब्दबद्ध कीजिए।

(घ) निम्नलिखित संवाद को मानक भाषा में लिखिए–

"हमारा कुकुर नहीं जाएगा तो हमहुं नाहीं जाएगा।"

8.8 उत्तरमाला

बोध प्रश्नों के उत्तर

1. (ग) 2. (ख) 3. (घ) 4. (घ) 5. (क) 6. (घ) 7. मित्रता का
8. फुलिया दाई के 9. विदेश

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

8.1 1. (क) 2. (ग) 3. (क) 4. (ग)

5. क्योंकि यह दोनों सखियों में अपने-अपने कामों को उत्तम सिद्ध करने के लिए चली आ रही लंबी बहस का निष्कर्ष सामने रखता है।

8.2 1. (ग) 2. (ग) 3. प्राचीनकाल

8.3 1. (ग) 2. (ख) 3. (ग) 4. (ग)

5. उन्हें अपने साथ रखा और सभ्य बनाया।

8.4 1. (ग) 2. (ख)

8.5 1. (क) 2. (क) क्यों बड़-बड़ करती है (ख) ऐ ! रूनी उठ।

8.6 भाषा कार्य स्वयं कीजिए।